गृहीत और अगृहीत मिथ्यात्व

प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा
छाबडा, इन्दौर

यह विषय किस ग्रंथ के आधार से हैं ?

छहढाला

प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

छहढाला में किसका वर्णन हैं?

१ दुःख

२ दुःख के कारण

३ दुःख से छुटने का उपाय

प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

जीव के दुःख का कारण क्या हैं?
मिथ्यादर्शन
मिथ्याज्ञान
मिथ्याचारित्र
श्रद्धा
ज्ञान
चारित्र
का मिथ्यापना
=मिथ्यात्व
ऐसे मिथ्या दृग-ज्ञान-चर्णवश
भ्रमत भरत दुःख जन्म मर्ण।
प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

मिथ्यात्व जीव को कब से हैं?

अनादि से

इसलिये दुःख भी कब से हैं?

अनादि से

मिथ्यात्व के प्रकार

अगृहीत	गृहीत
बिना सिखाया गया	नया ग्रहण किया गया
अनादिकालीन	नवीन - अगृहीत को पुष्ठ करता
देह और आत्मा को एक मानना	कुदेव, कुगुरू, कुधर्म के सेवन से होता

दुःख के कारण

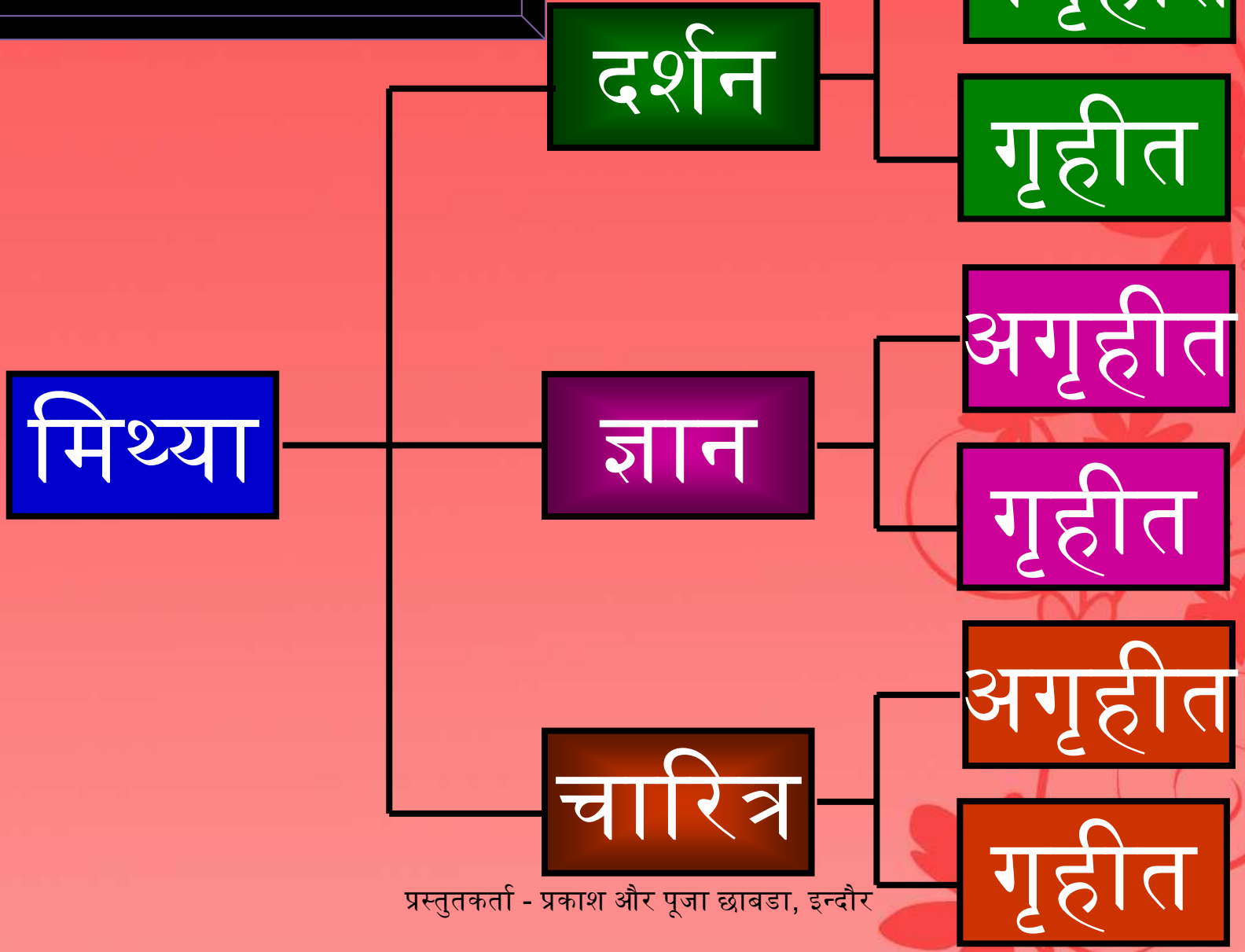

प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

अगृहित मिथ्या दर्शन क्या हैं?

जीवादि प्रयोजनभूत तत्त्व सरधै तिनमाँही विपर्ययत्व ।

»प्रयोजनभूत जीवादि तत्त्वों का विपरीत श्रद्धान

»सात तत्त्व संबंधी भूल

अगृहित मिथ्या ज्ञान क्या हैं?

याही प्रतीतिजुत कछुक ज्ञान
सो दुखदायक अज्ञान जान ।

- मिथ्या श्रद्धान के साथ जो भी जानना
- प्रयोजनभूत जीवादि तत्त्वों को विपरीत जानना
- संशय, विपर्यय, अनध्यवयसाय सहित पदार्थों को जानना

ज्ञान में होने वाले तीन दोष

संशय	शंका होना	ऐसा ही की ऐसे	मैं शरीर हूँ की आत्मा	निर्णय नहीं
विपर्यय	विपरीत जानना	ऐसा ही हैं	मैं शरीर हूँ	विपरीत निर्णय
अनध्यवसाय	कुछ निर्णय न होना	कुछ हैं	मैं कोई हूँ	निर्णय की इच्छा भी नहीं

अप्रयोजनभूत तत्त्वों को सही - गल्त जानने की अपेक्षा मिथ्या - सम्यक् नहीं

क्योंकि यहाँ मोक्षमार्ग का प्रकरण हैं

इसलिये मिथ्यादृष्टी रस्सी को रस्सी जाने तो भी मिथ्याज्ञान

सम्यग्दृष्टी रस्सी को सर्प भी जाने तो भी सम्यग्ज्ञान

जब श्रद्धा विपरीत होने पर ही ज्ञान विपरीत होता है

तब संसार का कारण मिथ्यादर्शन को ही कहना था

मिथ्याज्ञान को नहीं

ऐसा नहीं

ज्ञान का भी दोष

ज्ञान का क्या दोष ?

क्षयोपशम ज्ञान एक काल में एक ज्ञेय को ही जानता है

मिथ्यादर्शन के निमित्त से वह अन्य ज्ञयों को ही जानता है

प्रयोजनभूत जीवादि तत्त्वों को नहीं जानता है

प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

मिथ्याज्ञान के अन्य नाम

अज्ञान तत्त्वज्ञान का अभाव होने से

कुज्ञान अपना प्रयोजन नहीं साधने से

अगृहित मिथ्या चारित्र क्या हैं?

**इन जुत विषयनि में जो प्रवृत्त,
ताको जानो मिथ्याचरित्र ।**

» मिथ्या दर्शन और ज्ञान के साथ जो भी विषयों में प्रवृत्ति

विषयों में प्रवृत्ति

ग्रहण रुप

अशुभ आचरण

त्याग रुप

शुभ आचरण

मिथ्यात्व के साथ सर्व प्रवृत्ति मिथ्या चारित्र

मिथ्यात्व के बिना अशुभ प्रवृत्ति अचारित्र

प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

मिथ्यात्व के साथ कषाय भाव को मिथ्या चारित्र कहते हैं

कषाय का कारण ?

पदार्थों में इष्ट - अनिष्ट कल्पना

- उपकारी
- अनुपकारी

इष्ट - अनिष्ट को कल्पना क्यों कहते हैं?

» एक ही पदार्थ किसी को इष्ट लगता हैं , किसी को अनिष्ट

» एक जीव को भी एक ही पदार्थ किसी काल में इष्ट, किसी काल में अनिष्ट लगता

» जो पदार्थ मुख्य रुप से इष्ट लगता,वह भी अनिष्ट होता दिखता

» जो पदार्थ मुख्य रुप से अनिष्ट लगता,वह भी इष्ट होता दिखता

निशकर्ष

- पदार्थ इष्ट - अनिष्ट है नहीं
- क्योंकि -
- जो पदार्थ इष्ट वह सर्व को सर्व काल में इष्ट होना चाहिये
- जो पदार्थ अनिष्ट वह सर्व को सर्व काल में अनिष्ट होना चाहिये

पदार्थ उपकारी - अनुपकारी भी कैसे होता ?

- »पुण्य - पाप के उदय से
- »तो फिर पुण्य पाप में राग-द्वेष करें
- »कर्म स्वयमेव पुण्य पाप रुप नहीं होते
- »जीवों के भावों के निमित्त से होते हैं

पदार्थों में इष्ट - अनिष्ट बुद्धि होने पर

राग - द्वेष रुप परिणमन

मिथ्याचारित्र है

राग - द्वेष के ही विशेष

४ कषाय

९ नोकषाय

प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

गृहित मिथ्या दर्शन क्या हैं?

जे कुगुरु कुदेव कुधर्म सेव,
पोषै चिर दर्शनमोह एव

- »कुगुरु कुदेव कुधर्म के सेवन से
- »जो अगृहीत मिथ्यात्व पुष्ठ हो

कुगुरु किसे कहते हैं ?

अंतर रागादि धरैं जेह, बाहर धन अम्बरतैं स्नेह
धारैं कुलिंग लहि महत भाव, ते कुगुरु जन्म-जल उपल नाव

» जो अंतरंग परिग्रह - रागादि } सहित
» बहिरंग परिग्रह - धन वस्त्रादि }
» नाना प्रकार के वेश (कुलिंग) धारी
» उपर्युक्त परिग्रह और वेश होने पर भी स्वयं को पूजवाते

कुगुरु को किसकी उपमा दी गई हैं?

»उपल अर्थात पत्थर की नाव की-

»जो स्वयं डूबते

»दूसरों को भी डूबोते

किस अपेक्षा गुरुपना मानने का निषेद्य

१ कुल अपेक्षा - ये लौकिक कार्यों के लिये है

२ धर्मात्मा पुरुषों की संतति में होने से

क्योकिं उनके बडे तो धर्मात्मा थे नहीं

३ पट्ट द्वारा

गुरुपद योग्य कार्य न होने से गुरुपना कैसे हो

४

पहले स्त्री आदि के त्यागी हो, बाद में भ्रष्ट हो जाये

गृहस्थों के ही समान पूज्यपना कैसे हो

५

एक ब्रह्मचर्य रखा, अन्य सर्व पाप कार्य हो

»अब्रह्म ही तो पाप नहीं

»ब्रह्मचर्य भी धर्म बुद्धि से नहीं पाला

६

नाना रागी भेष धारी

- जैसे चोला, चादर ओढना, टोपी लगाना, लाल वस्त्र, श्वेत वस्त्र, भगवा वस्त्र रखना, टाट पहनना, मृग छाल पहनना, राख लगाना

ये वेष धारण कर गृहस्थों से अलग दिख उनको ठगते हैं

७

ऊँचा नाम धराकर

कठिन मार्ग न निभने से, नाम ऊँचे धरने से तो पूज्यपना नहीं होता

नाना वेष होने पर
किंचित धर्म के अंग भी
पाले तो भी पूज्यपना
नहीं होता हैं

प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

जिन मार्ग में पूज्य तीन लिंग (वेश)

निर्ग्रंथ दिगम्बर मुनि लिंग - तिलतुष मात्र परिग्रह रहित

उत्कृष्ट श्रावक - गयारहवीं प्रतिमाधारी -ऐलक क्षुल्लक

आर्यिका रुप

उत्कृष्ट श्रावक

ऐलक

» १ वस्त्रधारी

» भोजन के लिये पात्र नहीं रखते, हाथ में बैठकर भोजन करते हैं

क्षुल्लक

» २ वस्त्रधारी

» भोजन के लिये पात्र रखते हैं

मुनि लिंग धारणकर नहीं करने योग्य कार्य

- »किंचित भी परिग्रह रखना
- »विषय कषाय में आसक्त होना
- »नाना आरंभ करना
- »हिंसादि करना
- »अपनी पद्धति बढाने में उद्यमी होना

- श्वेत - रक्तादि वस्त्रों को ग्रहण करना
- धनादि रखना
- भोजनादि में लोलुपी होना
- दातार की स्तुति कर दानादि ग्रहण करना
- जबरदस्ती दानादि लेना
- गृहस्थों के बच्चों को प्रसन्न करना
- शादि करवाना

- »यंत्र - मंत्रादि करना
- »औषद्यी, ज्योतिषी आदि बतलाना
- »जिन बिम्ब से ऊपर बैठनादि प्रवृत्ति करना

मुनि पद लेने का क्रम

प्रथम तत्त्व ज्ञानी हो

उदासीन परिणाम हो

परिषहादि सहने ही शक्ति हो

स्वयमेव मुनि होने की चाह हो

प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

ये बाते विचारणीय हैं

- गुरु बिना हम निगुरा कहलायेंगे
- एक अक्षर का दातार भी गुरु होता हैं
- वर्तमान में श्रावक भी वैसे नहीं जैसे शास्त्र में कहे गये हैं
- हमारे अंदर श्रद्धान नहीं पर हम बाह्य लज्जादि से शिष्टाचार करते हैं

कुदेव किसे कहते हैं ?

जो रागद्वेष-मल करि मलिन, वनिता गदादिजुत चिह्न चीन
ते हैं कुदेव तिनकी जु सेव, शठ करत न तिन भवभ्रमण-छेव

- »जो राग - द्वेष सहित - अंतरंग में
  - »वनिता (स्त्री) आदि(राग सूचक)
  - »गदादि (द्वेष सूचक) - बाह्य चिन्ह सहित हो

कुदेव को मानने वाला कौन हैं? उसको क्या फल मिलता हैं?

- मूर्ख (अज्ञानी, मिथ्यादृष्टी) हैं
- उसके संसार का अंत नहीं आता हैं

देव के प्रकार

सुदेव	देव	कुदेव	अदेव
वीतरागी अरिहंत सिद्ध	भवनवासी, व्यंतर, ज्योतिषी, वैमानिक - देव गति के देव	हरि - हर आदि	पीपल, तुलसी आदि कल्पित देव

प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

कुदेव का सेवन जीव क्यों करते हैं

१.मोक्ष के प्रयोजन से

२. पर लोक के प्रयोजन से

३. इस लोक के प्रयोजन से

प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

इन प्रयोजनों की पूर्ति क्यों नहीं होती है?

१. मोक्ष की

»क्योंकि उसका तो सही स्वरुप और मार्ग ही नहीं समझता

२. पर लोक की

»स्वयं पाप बांधता
»देव के नाम पर हिंसा, विषयादि करता
»पुण्य का फल चाहता, कैसे मिले?

३. इस लोक की

»स्वयं का बांधा पूर्व पुण्य का उदय चाहिये

अज्ञान से जीव किन - किन को पूजता है और उनका पूजना क्यों योग्य नहीं हैं ?

हनुमानादि, गनगौर, सांझी, चौथ, शीतला, पितर, पीर-पैगम्बर आदि	कल्पना मात्र
भूत - प्रेत, व्यंतरादि	❖किसी का बुरा-भला करने में समर्थ नहीं ❖जब तक उसके पाप का उदय न हो ❖जो मानते उनको पाप का उदय और हो जाता है

सूर्य चन्द्रमा, शनिचरादि ज्योतिषी	ये आगामी ज्ञान के सूचक, कुछ भला बुरा करने के नहीं
देवी - दहाडी	❖कोई कल्पना मात्र ❖कोई व्यंतरनी, ज्योतिषीनी
घोडा, गाय, सर्पादि तिर्यंच	प्रत्यक्ष अपने से हीन, तिरस्कृत, निन्द्य देखे जाते है
अग्नि, जल, तुलसी आदि ऐकेन्द्रिय तिर्यंच	गायादि से भी प्रत्यक्ष हीन दशा दिखती है
शस्त्र, दवातादि अचेतन पदार्थ	❖प्रत्यक्ष सर्व शक्ति से हीन ❖पूजने का उपचार भी संभव नहीं
रोडा(सडक पर पडा पत्थर)	लोक में अपने से नीचे को नमन न करें,कोई प्रयोजन बिना नमन न करें

मोह की महिमा

कुदेव के सेवन से
हजारों विघ्न हो
उसे नहीं गिनता

कुदेव के सेवन न करने
पर भी अनेक इष्ट हो
उनहे नहीं गिनता

पुण्य के उदय से इष्ट
कार्य हो तो मानता
कुदेव सेवन से हुआ

एक विघ्न आये तो
मानता उनका सेवन
न करने से आया

प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

कुदेवादि को मानना कुछ कार्यकारी नहीं, तो कुछ बिगाड भी तो नहीं ?

बडा पाप

मोक्षमार्ग दुर्लभ हो जाता हैं (पर द्रव्य में इष्ट-अनिष्ट मान्यता होने से)

पाप बंध से आगामी दुःख पाते

»कर्म पर भी विश्वास न हो तो

»धनादि के लिये बाह्य कारण व्यापारादि करें

»कुदेवादि तो बाह्य कारण भी नहीं है

कुदेवादि को जीव मानता ही क्यों हैं?

जीवादि तत्त्वों के श्रद्धान व ज्ञान का अंश भी न होने से

राग - द्वेष की अति तीव्रता होने पर

जो कारण नहीं हैं, उनहें भी इष्ट-अनिष्ट के कारण मानता हैं

प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

व्यंतरों के विषय में कुछ प्रश्न

- क्या ये औरों को अन्यथा परिणमित कर सकते हैं?
- क्या इनका कुस्थान में निवास होता है?
- अप्रत्यक्ष बाते किस प्रकार बतलाते हैं?
- कभी पूछने पर भी नहीं या गल्त भ्रमरुप वचन क्यों कहते?
- क्या मंत्रादि से जलाना आदि होता हैं?

कुधर्म किसे कहते हैं ?

रागादि भाव हिंसा समेत, दर्वित त्रस स्थावर मरण खेत
जे क्रिया तन्हें जानहु कुधर्म तिन सरधै जीव लहे अशर्म

» अंतर में उठने वाले राग-द्वेष रुप भाव हिंसा
» त्रस - स्थावर के घात रुप द्रव्य हिंसा
» सहित जो भी क्रियायें
» उनहें धर्म मानना = कुधर्म
» इनमें श्रद्धा रखने से जीव दुखी होता हैं

हिंसादि, विषय सेवन, कषायादि

होना

में वृद्धि होना और उसे धर्म मानना

कुधर्म रुप मान्यता के कुछ उदाहरण

- »यज्ञादि
- »तीर्थों में स्नानदि
- »संक्रान्ति, ग्रहण, व्यतिपात में दान
- »बुरे ग्रहादि के नाम पर दान
- »पात्र समझकर लोभी पुरुषों को दान

जैन नाम धारीयों की भी कुछ कुधर्म मान्यतायें

»व्रतादि का नाम धारण कर श्रृंगार बनाना, इष्ट भोजनादि करना, कुतूहलादि, कषाय बढाने के कार्य, जुआ इत्यादि महान पाप कार्य करना

»जिन मंदिर में बाग - बागडी बनवाना, नाना कुकथा करना, सोना इत्यादि

कुदेवादि के वंदन निषेद्य के लिये मोक्ष पाहुड की गाथा

कुच्छियदेवं धम्मं कुच्छियलिंगं च बंदए जो दु ।
लज्जाभयगारवदो मिच्छादिट्ठी हवे सो हु ॥

» अर्थ :- यदि लज्जा से, भय से, बडाई से भी कुदेवादि को वंदन करता है तो मिथ्यादृष्टी है

» गृहित मिथ्यात्व को सप्त व्यसनादि से भी बडा पाप बताया गया हैं

गृहित मिथ्या ज्ञान क्या हैं?

एकांतवाद दूषित समस्त, विषयादिक - पोषक अप्रशस्त
कपिलादि रचित श्रुतको अभ्यास, सो है कुबोध बहु देन त्रास

» समस्त एकांत(वस्तु व्यवस्था से विपरीत)कथनों से दूषित
» विषय - कषाय, पाप का पोषण करने वाले
» कल्पित अज्ञानी जीवों के द्वारा बनाये गये शास्त्रों को
» हितकारी मानकर उनका अभ्यास करना(पडना, पडाना, सुनना, सुनाना, अधययन करना आदि)
» ये मिथ्याज्ञान बहुत दुःख देता है

गृहित मिथ्या चारित्र क्या हैं?

जो ख्याति लाभ पूजादि चाह,धरि करन विविध-विध देहदाह
आतम अनात्म के ज्ञान-हीन, जे जे करनी तन करन-छीन

प्रसिद्धि, लाभ, पूजा, सत्कार आदि की प्राप्ति की इच्छा से

१ शरीर को कष्ट देने वाले

२ क्षीण करने वाले

३ आत्मा-अनात्मा (आत्म-देह) के ज्ञान से रहित

की गई विविध क्रियायें

मिथ्यात्व से बचने का उपाय क्या हैं?

गृहीत मिथ्यात्व से	देव, शास्त्र, गुरु का सच्चा स्वरुप समझना
अगृहीत मिथ्यात्व से	जीवादि प्रयोजनभूत तत्त्वों की सच्ची जानकारीपूर्वक आत्मानुभूति पाना